हर मोती में सागर लहरे

पुरोवाक्

डॉ. यज्ञप्रसाद तिवारी

कवि स्वयं अपनी सृष्टि का ब्रह्मा है और उसकी सृष्टि ब्रह्मा की सृष्टि के कथमपि न्यून नहीं बल्कि उसके समानांतर होती है। हमारे आदि चिंतकों ने ब्रह्मा की अवधारणा रस रूप में की है। काव्यानंद को ब्रह्मानंद-सहोदर कहा गया है या यों कहें कि काव्यानंद ही ब्रह्मानंद की परिकल्पना है --- 'रसोवैसः'

तुलसीदासजी ने 'होहिं कवित मुकता मनि चारू' में जिस मुक्तामणि की बात कही है, उन्हीं मुक्तामणियों के इस संग्रह के हर मोती में सागर के विलसित होने का अनुभव हुआ है। गुलाबजी की काव्यकृति का यही चमत्कार है, मोती सदृश शब्दों की चमक का महत्व भी जिनसे समस्त कृतित्व का ताना-बाना बुना गया है और छंद के तागे से युक्तिपूर्वक मोती की उन गुरियों को पिरोया है जिनसे समस्त कृतित्व को समग्रता में अलग-अलग गुरियों में पिरोये जाने के बावजूद पूर्णता का आकार मिलता चलता है।

यों तो गुलाबजी का सम्पूर्ण कृतित्व मौलिक उपमानों, अलंकृत शब्दावलियों, वैचारिक अभिधानों और श्रेष्ठ भावों के संपृक्तत्व के कारण विविध परिदृश्यों का निर्माण करता है, तथापि रचनाकार ने जीवनदर्शन में 'अथ' से 'इति' का जितने सुन्दर सामंजस्य का प्रारम्भ से अंत तक निर्वाह किया है उसे पढ़ने के बाद ज्ञात-अज्ञात से परे कुछ भी शेष नहीं बच पाता है। रचना का सूत्र भी विद्यमान है 'यहीं' इस कृति में और रचना का निष्कर्ष भी।

इस कृति में मानव-जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण मानवीय मूल्यों के विकास के लिए किया गया है। फलतः उनकी रचनाओं में सशक्त मूल्यों का मौलिक आख्यान तो मिलता ही है, भक्ति-भावना और जीवन के रहस्य की उन कड़ियों का निर्वाह भी मिलता है जिसे जीवन का साध्य माना गया है।

इस संग्रह की कविताओं का वर्गीकरण करें तो विवेचन के

परिप्रेक्ष्य केलिए प्रमुखतया कुल छः आधार निर्मित होते हैं --

१. प्रस्तावना, जो गीत-सृजन का आधार है
२. भक्तिपूर्ण रचनाएँ
३. समाज-जीवन पर केन्द्रित रचनाएँ
४. जीवन की वर्णनपरक
५. जीवन की संध्याकालीन
६. रहस्यपरक

टेकयुक्त आंग्ल गीत 'अज्ञात के प्रति' (Song of the Unknown) में सवेदना और काव्य के गहन चिंतन और दर्शन के बिम्बात्मक रूपों का वर्णन प्रतीकात्मक परिप्रेक्ष्य में हुआ मिलता है। अभिव्यंजना की गहराई से जोड़कर देखने पर मानना पड़ता है कि गुलाबजी आत्माभिव्यक्ति को ही काव्य-प्रेरणा के रूप में स्वीकार करते हैं। यह उनके लिए उतनी ही स्वाभाविक है जैसे कोयल के लिए कूकना।

गुलाबजी जीवन जीने की कला का प्रस्थान बिंदु प्रेम को ही मानते हैं। उनकी उत्तरवर्ती कविताओं में प्रेम और संवेदना को युग्मवत प्रस्तुत किया गया है। भावनाओं का चित्रण करते समय वे प्रेम की सीमा का बंधन तोड़कर सृष्टि के उन उपादानों की व्याख्या करने लगते हैं जिसके बल पर कविता की शक्ति मानवीय मूल्य सिद्ध होने लगते हैं। उनकी अभिव्यक्ति में पिता-पुत्र का प्रेम, ईश्वर-मानव का प्रेम, ज्ञाता-ज्ञेय का प्रेम आदि रूपों का संसार समाहित मिलता है जिसका अनंत दर्शन भारतीय संस्कृति का रहस्य बनकर उभरता है और जिसकी जिज्ञासा मानव मात्र की ईश्वरीय विभूति बनकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा का रूप लेती है।

अमरत्व की जितनी पहचान गुलाबजी को है, उतनी किसी कवि को नहीं हुई। मृत्यु को अमरत्व का सोपान कहनेवाले गुलाब खंडेलवाल को मृत्युबोध हो चुका है। उन्हें मृत्यु का भय नहीं, अपितु उसे तो वे जीवन और अमरता का सहचर मानकर चलने वाले 'मुक्ति-बोध' का रहस्य या पर्याय कहते हैं।

गहरी निद्रा में नित्य सोकर जहाँ जाते लोग

चिर-निद्रा में भी तो वहीं उन्हें जाना है
भय क्या जब अंतिम क्षण की भी स्थिति नित्य-सी हो
फिरें बस एक से जाकर एक से न आना है
चिर-निद्रा से भी शेष में पर भू पर लौटना है
कर्म-फल है पाना यहीं, यद्यपि नया बाना है
परिवेश-मोह त्याग, जीते-जी भी छूटते जो
मृत्यु से क्यों डरे जिसने निज को अमर माना है

गुलाबजी की कविताओं में जीवन की जीने की तमन्ना (एषणा) है तो जीवन को जीकर जीतने की अद्‌भुत सामर्थ्य भी है । उनकी रचनाओं में इहलौकिक प्रेम है, पारलौकिक वितृष्णा नहीं । जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यमयी बातों को वे अपनी कविता में लाने की सहज क्षमता रखते हैं, उन्हें ही एक छोटे पर विस्तृत फलक बनाकर ग़ज़ल में इस तरह पिरो देते हैं कि वह एक गजल कई रचनाओं से भारी पड़ जाती है ।

अब खुला राज कि इस लब्ज़ का मानी क्या है
पूछो अब आ के मेरे दिल से, जवानी क्या है
यह तो बतलाओ कि हम कैसे फिर मिलेंगे यहाँ
तीर पर लौटती लहरों की चिन्हानी क्या है !
सिवा मेरे भगीरथ है कौन, हिन्दी-गजल-गंगा का !
न्याय तो होगा कभी, दूध क्या, पानी क्या है
प्यार तो प्यार ही है, दिल ने या आँखों ने कहा
खोज बेकार है, 'क्या सच है, कहानी क्या है'
बाग़ है झूम रहा तेरी जिस खुशबू से 'गुलाब'
बागवाँ ने अगर मानी कि न मानी, क्या है !

वास्तव में गुलाबजी ने कविता की महिमा का गान कला की अपरिमित क्षमता के अनुसार किया है इसलिए उनकी रचना में काव्य मंत्रवत् प्रस्फुटित होता है । गुलाबजी ने कविता की परिभाषा और ऊँचाई को इन्हीं व्यंजनाओं के माध्यम से लिखा और कहा है ।

अंतर में भावना का जब उफान आता है
शब्द जग जाते, अक्षरों में प्राण आता है
दीप ले तुकों के छंद-लय में ढूँढना है व्यर्थ

मंत्र काव्य का तो आप कानोकान आता है

इसी परिप्रेक्ष्य में अपने गीतों के विषय में उनका उद्घोष भी यही है

जब तक स्वर का लेश रहेगा
तब तक शब्दों में मेरा भी जीवन शेष रहेगा
ज्यों मानस में तुलसी जीवित
गीतों में रवीन्द्र हैं गुंजित
त्यों निज कृति में नित मेरा चित्
ले नव वेश, रहेगा

अंतस से जन्मी कवि की चिर कामना मातृभूमि के चरणों में कैसे समर्पित हो उठती हैं उसकी बहुआयामी परिणति देखने योग्य है।

काल का सिरहाना, ओढ़े चादर इतिहास की
सो रहा हूँ मैं भू पर वाल्मीकि-व्यास की
कभी तो घिरे महान कवियों से सुधीजन को
आयेगी सुध इस भारती के मूक दास की

जिन कवियों की अमित महिमा का गान करके कवि अद्यावधि कविता के महत्त्व का प्रतिपादन कर रहे हैं उन रचनाकारों की कलात्मक प्रतिभा को 'बिस्व बिमोहिनि स्वबस बिहारिनि' * का जो वरदान प्राप्त है, उसकी भावभूमि का चित्रण महाकवि गुलाब खंडेलवाल जैसे माँ भारती की महिमा के गायक कवियों द्वारा सदा होता रहा है और होता रहेगा। इस संग्रह के प्रत्येक गीत से कवि की अस्मिता जुड़ी हुई है। इस दृष्टि से भी 'हर मोती में सागर लहरे' का सदा विशेष महत्त्व रहेगा। इत्यलम्।

डॉ. यज्ञप्रसाद तिवारी
प्रोफ़ेसर एवं विभाग प्रमुख (पूर्व)
हिन्दी विभाग
राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय
नागपुर (महाराष्ट्र)

*भव भव-विभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहिनि स्वबस बिहारिनि (मानस)